IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'छत्तीसगढ़ के पारंपरिक लोकपर्व'

डॉ. यशवंत कुमार साव
सहायक प्राध्यापक(हिन्दी)
शासकीय महाविद्यालय अरमरीकला, जिला-बलोद (छ.ग.)

सारांश- छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति में विभिन्न अवसरों पर पर्व मनाने की परंपरा है| ये लोक पर्व देवी-देवता, माता-बहनों एवं कृषि कार्य से संबंधित यंत्रों को समर्पित है| छत्तीसगढ़ के पर्व चंद्र माह के अनुसार मनाये जाते हैं, जिसमें पूर्णिमा एवं अमावस्या का विशेष महत्व है| यहाँ के कुछ लोक पर्व देश के अन्य भागों में मनाये जाने वाले हैं, किन्तु उन पर्वों में यहाँ की स्थानीय लोक संस्कृति की झलक स्पष्ट झलक दिखाई देती है| लोक पर्वों में पारंपरिक रीति-रिवाज, वेश-भूषा, खान-पान, पूजा पद्धति, आस्था और मान्यता के दर्शन होते हैं| कुछ लोक पर्व जैसे-हरेली, कमरछठ, गौरा-गौरी, मातर मनाने की परंपरा छत्तीसगढ़ में ही मिलती है| यहाँ के कुछ लोक पर्व से मिलता हुआ पर्व अन्य राज्यों में भी देखने को मिलती है| यहाँ के लोक पर्व का अपना एक अलग रंग है, अपनी सुगंधि है जिससे छत्तीसगढ़ का सम्पूर्ण लोक महकता है| लोक पर्वों के अध्ययन से यहाँ के लोक की धार्मिक आस्था-विश्वास-मान्यता को समझा जा सकता है| छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान राज्य है और यहाँ के ग्रामीण अंचल के लोगों का जीवन कृषि पर आधारित है| कृषि के लिए वर्षा, बैल, कृषि यंत्र आदि की आवश्यकता होती है| अच्छी फसल होने पर किसान प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है, खुशी से झूमने, गाने एवं नृत्य करने लगता है, उत्सव मनाने लगता है| लोक पर्व में कृषि कार्य में सहयोगी बैल, हल, कृषि औजार की पूजा की जाती है, पालन-पोषण, और रक्षा करने वाले देवी-देवताओं की पूजा-प्रार्थना की जाती है| उनसे सुख, शांति, समृद्धि का आशीर्वाद मांगा जाता है| छत्तीसगढ़ में ग्रामीण अंचल में लोग प्रायः सादा भोजन ही करते हैं| यहाँ भाजी विशेष प्रिय है जिसे बनाने के लिए अत्यंत कम तेल, मसाले की आवश्यकता होती है, किन्तु पर्व में यहाँ के लोग पकवान बनाकर खाना पसंद करते है| लोक पर्वों में विभिन्न पकवान ठेठरी, खुरमी, चीला, चौसेला, अइरसा बनाकर आराध्य को भोग लगाकर अत्यंत चाव से खाते एवं खिलाते हैं| यहाँ के मुख्य लोक पर्व अकती, हरेली, भोजली, कमरछठ, आठे-कन्हैया, पोला, तीजा, छेरछेरा, गौरा-गौरी, गोवर्धन पूजा, मातर, मड़ई, जँवारा आदि है|

बीज शब्द- छत्तीसगढ़, लोकपर्व, जँवारा, भोजली, अकती, हरेली, कमरछठ, तीजा, गौरा-गौरी, मातर

जँवारा- यह पर्व देवी को समर्पित है| चैत्र नवरात्रि के समय जँवारा बोकर देवी की आराधना, भक्ति एवं सेवा की जाती है | चैत्र माह की प्रतिपदा को रीति-रिवाज के अनुसार बांस से बनी टोकरी में जँवारा बोया जाता है| "जँवारा शब्द शीतकाल में बोये जाने वाले एक अनाज जौं से बना है| जँवारा में गेहूँ, उड़द, चना आदि पाँच या सात प्रकार के बीज घर के भीतर भूमि पर अथवा टोकनियों में देवी की स्थापना के पश्चात् बोये जाते हैं|"**1** बीजों को नवरात्रि के एक दिन पूर्व ही भिगा देते हैं इसे 'बिरही भिगाना' कहते हैं| इसके साथ एक ज्योति भी जलाई जाती है जो अनवरत नौ दिन तक प्रज्वलित होती है| जँवारा पर्व में प्रतिदिन जसगीत का गायन होता है, इसे माता सेवा करना कहते हैं| जसगीत के माध्यम से देवी के पराक्रम, स्तुति, प्रार्थना तथा शोभा का यशोगान होता है| जसगीत मे ढोलक, मजीरा, झांझ, खरताल आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग करते हैं| जसगीत को सुनकर ग्रामीण भाव विव्हल होकर झूमने लगते हैं, इसे देवता चढ़ना कहते हैं| नौ दिन माता की सेवा करने के बाद अगले दिन शोभा यात्रा के साथ तालाब में जँवारा का विसर्जन किया जाता है| जँवारा को विसर्जन के लिए घर से प्रस्थान के पूर्व कहीं-कहीं पशु बलि की भी परंपरा है| तालाब में विसर्जन के बाद टोकरी से जँवारा के पौधे को धोकर अलग कर लिया जाता

है| इसे प्रसाद के साथ ग्रामीणों को वितरित किया जाता है जिसके बाद कान के पीछे खोंसकर जँवारा बधने की परंपरा है| जँवारा बधने के बाद जीवन भर इस संबंध का निर्वाह किया जाता है| मिलने पर आपस में एक दूसरे को सीताराम जँवारा कहते हैं|

जँवारा विसर्जन

अकती पर्व- वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाते हैं| इस दिन ग्रामीण सबसे पहले शीतला माता के मंदिर में दोना में धान लेकर जाते हैं| जिसके बाद वहाँ गाँव का बैगा सभी के घरों से लाये गये धान के बीज को एक साथ जमीन में रखकर मिला देता है| इसके बाद पारंपरिक रीति रिवाजों से पूजा की जाती है| पूजा गाँव का बैगा करता है जो ब्राह्मण नहीं होता है| पूजा के बाद दो बच्चों को बैल बनाकर हल चलाने का अभिनय कराया जाता है| सांकेतिक हल को धान की ढेरी के चारों ओर चलाया जाता है| जिसके बाद गाँव में मुनादी होती है सभी अपने घर से शीतला मता के लिए जुड़वास (तेल में हल्दी मिलाकर चावल, दाल, नमक, मिर्ची) आदि लेकर आते हैं| शीतल माता को जुड़वास अर्पित करने के बाद धान की ढेरी से दोना में धान भरकर ले जाते हैं| जिसे बाद में खेत में जाकर बीज का छिड़काव कर धान बोने की शुरुआत के साथ खेती प्रारंभ करते हैं| अकती जिसे हिन्दी में अक्षय तृतीया कहते हैं इस दिन को अत्यंत ही शुभ माना जाता है| इस तिथि में विवाह आदि शुभ कार्य करने की परंपरा है| छत्तीसगढ़ में अकती के दिन पुतरा-पुतरी (गुड्डा-गुड्डी) का विवाह करने की भी परंपरा है| यह छोटे-छोटे बच्चों द्वारा किया जाता है| इसमें वास्तविक विवाह के समान ही सभी रस्मों चुलमाटी, तेलमाटी, मायन, परघनी, भाँवर, टिकावन, विदाई आदि का पालन किया जाता है|

हरेली- छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति में श्रावण महीने का विशेष महत्व है| गाँव में अधिकांश लोगों का जीवन कृषि पर निर्भर है और कृषि के लिए जल अत्यंत आवश्यक है| श्रावण महीना फसलों के लिए जीवनदायिनी जल लेकर आता है| वर्षा के आगमन के साथ ही धरती हरियाली का चादर ओढ़कर अपना शृंगार कर लेती है| किसानों के खेत हरे-भरे फसलों से लहलहाने लगते हैं| किसानों का मन खुशी से झूमने लगता है| ऐसे ही समय श्रावण आमावस्या को छत्तीसगढ़ के लोक जीवन में हरेली पर्व मनाने की परंपरा है| हरेली शब्द ही हरियाली का पर्याय है| हरेली के दिन किसान अपने सभी कृषि औजारों को अच्छे से धोकर तुलसी-चौरा के पास आँगन में रखकर उसकी पूजा करता है| छत्तीसगढ़ में चावल के आते के घोल से बनने वाला चीला लोकप्रिय व्यंजन है| पूजा में चीला विशेष रूप से चढ़ाया जाता है| चावल के आटे को घोलकर छिड़कते है एवं फूल, दूब, गुलाल, नारियल, अगरबत्ती, दिया जलाकर पूजा करते हैं| साथ ही हरेली पर्व में पशुधन को लोंदी खिलाने की परंपरा है| लोंदी गेंहू के आटे को गूँदकर अरंडी के पत्ते में लपेटकर खिलाते हैं साथ ही गाँव के राऊत द्वारा गोधन के स्वास्थ्य के लिए पकाकर दिये गये जड़ी-बूटी को भी खिलाते हैं| नीम के औषधीय गुणों से सभी परिचित हैं| सभी के घरों में दरवाजे के पास राऊत नीम की टहनी लगाते हैं| दिन में गाँव के मैदान में सभी ग्रामीण एकत्रित होकर पारंपरिक खेलों का आनंद लेते हैं| इस दिन गेड़ी चढ़ने की भी परंपरा है|

भोजली- छत्तीसगढ़ के लोकपर्व में भोजली का विशिष्ट स्थान है| "बस्तर अंचल में हरितालिक व्रत के लिये भोजली उगायी जाती है| बदने वाले इसी बीच भोजली बद लेते हैं| रक्षाबंधन के अवसर पर बहिन अपने भाई को राखी के साथ-साथ भोजली भी अर्पित करती हैं|"**2** श्रावण मास महिलाओं के उत्सव के महीना है| छत्तीसगढ़ में श्रावण के महीने में हरेली पर्व के साथ ही

श्रावण पंचमी से लेकर पूर्णिमा (रक्षाबंधन) तक भोजली पर्व मनाने की परंपरा है| भोजली बोने के एक दिन पहले पाँच प्रकार के अनाज को भिगा दिया जाता है जिसमें ज्यादा मात्रा गेंहू का होता है भोजली को बांस की टोकरी में मिट्टी डालकर बोते हैं| जिसकी नौ दिनों तक विधि-विधान से पूजा की जाती है| भोजली में हल्दी मिलाकर जल का छिड़काव किया जाता है| इस अवसर पर महिलाओं द्वारा भोजली गीत गाने की भी परंपरा है| रक्षाबंधन के दिन भोजली का तालाब में विसर्जन किया जाता है| भोजली तेली और कलार जाति द्वारा बोने का प्रमाण भोजली गीत में मिलता है| साथ ही भोजली में भाई अपनी बहन का भार भी उतारता है-

"तेलिन कलारिन दाई भोजली उझोथय वो,हमरो उझोना कर दे|

आवव- आवव मोर कका के बेटा रे,मोर उतारव भार|"**3**

भोजली के विसर्जन के बाद भोजली को समवयस्क युवतियों द्वारा एक दूसरे के कान के पीछे खोंसकर भोजली बधने की भी परंपरा है| "भोजली विसर्जन के पश्चात उसकी कुछ बाली रख लेती हैं और जलाशय के तट पर समवयस्क बालाओं के कानों पर भोजली खोंसकर इच्छानुसार भोजली बदती हैं और उस दिन से आजीवन एक दूसरे को भोजली कहकर संबोधित करती हैं| मैत्री का यह रूप भी अपूर्व है|"**4**

कमरछठ- छत्तीसगढ़ में माताएं संतान की दीर्घायु और परिवार के सुखमय जीवन के लिए कमरछठ का व्रत करती हैं| इस दिन माताएं निर्जला व्रत करती हैं और एक जगह एकत्रित होकर सगरी बनाकर शिव पार्वती स्थापित करती हैं| भगवान शिव को संतान के दीर्घायु के लिए भैंस का दूध, लाई, महुआ, फूल आदि अर्पित करती हैं| इस दिन पसहर चावल एवं छ: प्रकार की भाजी का विशेष महत्व है| ये सभी प्राकृतिक रूप से उगे होते है, जिसको उगाने के लिए हल का प्रयोग न किया गया हो| पूजा स्थल से लाए गए पोता (पीली मिट्टी में भीगा कपड़ा) को अपने संतान के पीठ पर स्पर्श कराती हैं| फिर पसहर चावल और छ: प्रकार की भाजी को बिल्ली, कुत्ते आदि छ: प्राणियों को देने के पश्चात ग्रहण करती हैं|

आठे कन्हैया- छत्तीसगढ़ में कृष्ण जन्माष्टमी को आठे कन्हैया के नाम से मनाने की परंपरा है | भद्रपद अष्टमी को भगवान श्री कृष्ण ने जन्म लिया था इसीलिए इस दिन इस पर्व के मनाते हैं| इस दिन लोग उपवास रखते है एवं सायंकाल दीवार पर आठे कन्हैया बनाकर परंपरा अनुसार पूजा करते हैं| जिसके बाद फलाहार करते हैं|

पोला- छत्तीसगढ़ में पोला पर्व उत्साह पूर्वक मनाया जाता है | पोला पर्व में बैल की पूजा की जाती है| साथ ही मिट्टी से बने बैल को भी सजाकर उसकी पूजा करते हैं| मिट्टी के बैल में चार पहिये लगे होते हैं जिसे बच्चे रस्सी की सहायता से खींचकर आनंद लेते हैं| बच्चों के लिए पोरा-जाता आदि मिट्टी के बने खिलौने खरीदते हैं| बच्चे इन खिलौनों से खेलते हैं| इन मिट्टी के खिलौने को कुम्हार लोग बनाते हैं| पूजा में छत्तीसगढ़ी व्यंजन चीला का विशेष महत्व है| इस दिन चावल आटे में गुड़ डालकर मीठा चीला बनाते हैं जिसे पूजा में चढ़ाने के बाद धान के खेत में भी चढ़ाने की परंपरा है| पोला त्यौहार तक धान के पौधे के अंदर बीज आना प्रारंभ हो जाता है| कहीं-कहीं बैल दौड़ की भी परंपरा है, जिसमें किसान अपने बैलों को सजाकर ले जाते हैं एवं बैल दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेते हैं| विजेताओं को पुरस्कृत किया जाता है|

पोला पर्व

तीजा- यह त्यौहार पूर्ण रूप से छत्तीसगढ़ की महिलाओं को समर्पित है| तीजा पर्व भाद्रपद शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाते हैं| कमरछठ में जिस प्रकार मताएं अपने संतान के लिए व्रत करती हैं, तीजा व्रत पति की दीर्घायु के लिए किया जाता है| तीजा का व्रत महिलाएं मायके में ही करती हैं| तीज के कुछ दिन पूर्व मायके से कोई आकर महिलाओं को लेकर जाता है| इस ग्रामीण क्षेत्रों में प्रायः सभी बेटियाँ अपने मायके में आई रहती है जिससे उन्हें अपनी पुराने सहेलियों से मिलने का अवसर मिलता है| तीजा व्रत के एक दिन पूर्व 'करू भात' (करेला सब्जी चावल) खाने की परंपरा है| इस दिन सभी के घर अनिवार्य रूप से करेले की सब्जी बनती है| तीज के दिन महिलाएं दिन भर निर्जला व्रत करती है| संध्या विधि-विधान से पूजा करती हैं| दूसरे दिन चतुर्थी को पूजा करने के बाद व्रत तोड़ती हैं| गाँव में परिचितों के घर आपस में भोजन के लिए भी जाती हैं|

छेरछेरा- छत्तीसगढ़ में छेरछेरा पर्व पौष मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है| बस्तर अंचल में भी छेरछेरा पर्व मनाने का वर्णन मिलता है-" खड़ी फसल का स्वागत करता है- 'लछमी-जगार' और कति फसल की उपलब्धि के उल्लास को अभिव्यक्ति देते हैं-'दिवारी-तिहार' और 'छेरछेरा-तिहार'| छेरछेरा तिहार को छेरता-तिहार भी कहते हैं|"**5** यह वह समय है जब किसान अपने वर्ष भर की मेहनत धान के फसल को जमा कर लेता है| इस दिन छोटे-छोटे बालक-बालिकाएं एवं युवक-युवतियाँ प्रातः काल से ही थैला या टोकनी लेकर गाँव में निकल पड़ते हैं| गाँव में सभी चाहे छोटे किसान हो या बड़े किसान सभी इस दिन धान का दान करते हैं| दान की महत्ता से सभी परिचित है यह दान का और याचना का पर्व है| पहले युवकों द्वारा टोलियों में जाकर डंडा नृत्य करने की भी परंपरा थी| आजकल बहुत कम देखने को मिलता है| घर में पहुंचकर 'छेरी के छेरा छेर बरकनीन छेरछेरा, माई कोठी के धान ल हेर हेरा' कहकर धान मांगते हैं| छेरछेरा का आध्यात्मिक पहलू यह है कि इस पर्व में छोटे-बड़े का भेदभाव एवं अंहकार से परे सभी याचना करते हैं एवं दान देते हैं|

गौरा-गौरी- कार्तिक मास के अमावस्या तिथि को लक्ष्मी पूजा की रात्रि में गोरा-गौरी पर्व मनाया जाता है| इस पर्व का प्रारंभ गौरा चाँवरा में कुछ दिन पहले ही फूल कुचरने के साथ हो जाता है| आमवास्य के दिन दिन मे पवित्र मिट्टी लाकर भगवान शिव और पार्वती की मूर्ति बनाते हैं| जिसे चौकी में रखकर आकर्षक रंगीन कागज एवं धान की बालियों से सजाते हैं| चौकी में चारों कोनों में दीये भी जलाया जाता जाता है| इस अवसर पर गौरा-गौरी गीत गाने की भी परंपरा है| इस चौकी को सिर में धारणकर रात में गौर-गौरी की यात्रा निकाली जाती है| यह यात्रा सभी घरों के पास से गुजरती है जिसका सभी लोग अपने आँगन में चौक पूरकर स्वागत एवं पूजन करते हैं | अंत में गौरा-गौरी का तालाब में विसर्जन होता है|

गौरा-गौरी

गोवर्धन पूजा- लक्ष्मी पूजा के दूसरे दिन छत्तीसगढ़ में गोवर्धन पूजा की परंपरा है| ग्रामीण अपने घर में गोवंश को रखने के स्थान पर गोबर से गोवर्धन पर्वत बनाते हैं एवं मध्य में कृष्ण की मूर्ति बनकर उसे धान कि बाली, मेमरी पान, सिलयारी आदि विभिन्न फूल पत्तों से सजाते हैं, जिसके बाद पारंपरिक रीति-रिवाज के साथ पूजा करने के बाद गोवंश को खिचड़ी खिलाने की

परंपरा है| खिचड़ी- बड़ा, पूड़ी, दाल, चावल, अरबी और कद्दू की सब्जी दूध, दही, शहद, गंगाजल आदि मिलाकर बनाते हैं| इस दिन ग्रामीण अंचल में प्रायः सभी घरों में कोचई और कुम्हड़ा की सब्जी बनाते हैं| गाँव में सहाड़ा देवता के पास यादव समाज के द्वारा गोवर्धन पूजा का आयोजन किया जाता है| गाजे-बजे के साथ गोपालक राउत समाज मड़ई लेकर दोहों के साथ राउत नृत्य करते हुए पूजा स्थल में एकत्रित होते हैं| पूजा में सभी जाती के लोग भाग लेते हैं| पूजा के बाद गोवर्धन को बछड़े के खुर से स्पर्श कराने के बाद सभी लोग हाथ में लेकर एक दूसरे के मस्तक पर लगाते हैं| ग्रामीण सभी घरों में जाकर गोवर्धन की टीका लगाकर अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं एवं छोटों को आशीर्वाद देते है| यह पर्व सामाजिक सद्भाव का, गोवंश के प्रति श्रद्धा का, हर्ष, उल्लास और शौर्य का अनुपम उदाहरण है| दीपावली के अवसर पर राउत जाति की महिलाओं द्वारा घर के दीवारों पर सजावट भी की जाती है इसे 'हाथा देना' कहते हैं|

गोवर्धन पूजा के अवसर पर हाथा देती महिला

मातर- गोवर्धन पूजा के दूसरे दिन मातर पर्व मनाने की परंपरा है | मातर जगाने का कार्य राउत समुदाय के द्वारा किया जाता है| मातर के लिये सबसे पहले विधि विधान से पूजा उपरांत खोड़हर देवता को घर से गाजे-बाजे के साथ दोहा कहते राउत नृत्य करते हुए दैहान में ले जाकर गड़ाते हैं| इस पर्व के लिए गाँव के सभी लोग गौठान में एकत्रित होते हैं| खोड़हर देवता (लकड़ी से बना स्तंभनुमा देवता) के पास राउत नृत्य करते है एवं अपने शौर्य का प्रदर्शन करते हैं, जिसका सभी ग्रामीण आनंद लेते है| अंत मे प्रसाद के रूप में दोने में खीर का वितरण किया जाता है|

मड़ई- यह एक ऐसा पर्व है जिसे ग्रामीण हर्षोल्लास के साथ मानते हैं | "मड़ई में संबंधित अंचल की लोक संस्कृति की चरमावस्था परिलक्षित होती है, क्योंकि वहाँ लोक-संस्कृति को लोक संस्कृति परिभाषित करने वाली गतिविधियों का कीर्तिमान स्थापित होता है|"**6** मड़ई लंबे बांस के ऊपर विभिन्न रंगों के कपड़े पहनाकर या रस्सी मे रंगीन पन्नियों से सजाकर बनाते हैं| मड़ई देवता का स्वरूप है| जिनके घरों में मड़ई सजाते है उसका रंग एवं पूजा पद्धति निश्चित होती है| इसे गाँव में अलग-अलग जाति के अनुसार सजाते हैं | लाल, सफेद एवं काला इसके मुख्य रंग हैं जो विभिन्न देवी-देवताओं को सर्पित है| निषाद समाज के लोग रंगीन मड़ई सजाते हैं| मड़ई के दिन बजे-गाजे के साथ सभी अपने घरों से मड़ई लेकर एकसाथ निकलते हैं| साथ ही इस दिन गाँव में दुकाने भी सजती हैं जहां से लोग अपनी पसंद की वस्तुएं मिठाइयां इत्यादि खरीदते है| सबसे मुख्य आकर्षण रहचुली (हाथ से चलने वाला झूला) का होता है| सबसे ज्यादा लोगों को रहचुली का आनंद लेते देख जा सकता है| ग्रामीण पहले मड़ई जाने पर पान अवश्य खाते थे| इस दिन जहां मड़ई है वहाँ लोगों के घरों मेहमान भी आते है जिससे खुशीयां दुगुनी हो जाती है|

होली- छत्तीसगढ़ में होली के अवसर पर गाये जाने जसगीत का विशेष महत्व है| होली के कुछ दिन पहले से ही जसगीत का गायन प्रारंभ हो जाता है| जसगीत गायन के लिए नगाड़ा मुख्य वाद्य यंत्र है| होलिका दहन के दिन ग्राम में एक निश्चित स्थान पर सभी ग्रामीण एकत्रित होकर होलिका दहन करते हैं| होलिका दहन के लिए सभी ग्रामीण अपने घर से कंडा लेकर जाते हैं|

ग्राम का बैगा पारंपरिक रीति से पूजा उपरांत चकमक पत्थर से आग जलाकर होलिका दहन करता है| सभी ग्रामीण आग में कंडा डालकर चावल छिड़कते हुए होलिका के चक्कर लगाते हैं| अगले दिन फाग-गीत गाकर रंग-गुलाल खेलते हैं|

इस प्रकार छत्तीसगढ़ में चैत्र माह में- जँवारा, वैसाख माह में- अकती, श्रावण महीने में- हरेली, भोजली, भाद्रपद माह में- कमरछठ, आठे-कन्हैया, तीजा, पौष माह में- छेरछेरा, कार्तिक माह में गौरा-गौरी, गोवर्धन पूजा, मातर और फाल्गुन माह में- होली मनाने की परंपरा है| होली पर्व के साथ ही सूर्य भी तेज होने लगता है और यह समय किसानों के आराम का होता है जिसमें वे अगले वर्ष फसल बोने की तैयारी करते हैं साथ ही यह समय विवाह आदि का होता है| छत्तीसगढ़ में ग्रामीण अंचलों में विवाह प्रायः ग्रीष्म काल में ही होता है| इस समय किसान कृषि कार्यों से मुक्त रहता है साथ ही यह मौसम सीमित संसाधन में जीवन निर्वाह करने वाले कृषकों के लिए विवाह अनुकूल रहता है|

संदर्भ-

1. नायडू, हनुमंत,(1987) छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का लोकतात्विक तथा मनोवैज्ञानिक अनुशीलन, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, पृ.-73
2. जगदलपुरी,लाला,(2016)बस्तर इतिहास एवं संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ.-148
3. शुक्ल, दयाशंकर, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-177
4. अमृतलाल,तुलसी के बिरवा जगाय;आदिवासी अनुसंधान प्रकाशन छिंदवाड़ा मध्य प्रदेश-1964,पृ.सं.-238
5. जगदलपुरी,लाला,(2016)बस्तर इतिहास एवं संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ.-140
6. वही, पृ.-144

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation